अषाढ़ी मेला

केवल अधिकृत लोग ही बगवाल में भाग लें

बगवाल या बग़्वाव में भाग लेने वालों को द्यौक अर्थात् देवता के लोग कहते हैं। देवी के डोले को कंधे पर उठाने वाले व्यक्तियों को "डोलिया" ही कहा जाता है। इन सहभागियों के लिए ये कार्य पूजा जैसे ही हैं । चार खाम सात थोक के सामान्य जन इन दिनों पुजारी, द्यौक, डोलिया, डंगरिया, जगरिया, ढोली, छुलैत, हुड़किया आदि सभी में शक्ति का आवेश देखते हैं और इनपर अक्षत - फूल चढ़ते हैं । ये सभी वर्ग मेले में निःस्वार्थ भक्ति भाव से सात्विक भोजन, व्रत और शुद्ध दिनचर्या लेकर जुड़ते हैं अर्थात् यह उनके लिए यह अनुष्ठान है। स्थानीय लोगों के लिए बलि, बगवाल, डोली व जमानि में भाग लेना यज्ञ में अपनी ओर से आहुति देने जैसा है, चार खाम सात थोक निवासियों के लिए यह आवश्यक है।

देवीधुरा का अषाढ़ी मेला भक्ति का उत्सव है। यहाँ मेले में गाए जाने वाले लोक गीतों जैसे चाँचरी, झोड़ा, भगनौल, छपेली आदि में मुख्यतः देवी-देवताओं की आराधना-परक गीत रहते हैं। अतः सांस्कृतिक कार्यक्रम भी भक्तिपरक होते हैं। एक सामान्य ग्रामवासी की स्तुति सरल भाषा में , निःस्वार्थ और भावपूर्ण होती है।

बाहर से आए जनों से निवेदन है कि परंपराओं के साथ बचकाना हरकत व परिहास न करें । जो लोग अधिकारी नहीं हैं या वे स्थानीय जन जो शुद्ध तन मन से नहीं आए हैं बग़्वाल के समय खोलीखंड मैदान से दूर रहें, वहाँ जाकर

भाग न लें। इस बगवाल में यक्ष् ,गंधर्व, योगिनी, डाकिनी शक्तियाँ भी सम्मिलित होती हैं, जो आपसे रुष्ट हो सकते हैं अतः प्रमाद करने से बचें।

हीरा बल्लभ जोशी

अध्यक्ष

श्री वाराही शक्तिपीठ न्यास, देवीधुरा